साथ–साथ दक्षिण रीजियन व पूरे दण्डकारण्य में पीएलजीए बलों को मजबूत बनाने में कामरेड विजय ने अपने हिस्से का योगदान बखूबी निभाया। वह हमेशा अपने साथियों और उच्च कमेटियों के साथियों से सीखते हुए अपनी राजनीतिक व सैद्धांतिक क्षमताओं को बढ़ाने की कोशिश करते थे। देश–दुनिया के राजनीतिक घटनाक्रम के बारे में पढ़ने और सुनने में वह काफी दिलचस्पी रखते थे। वह तमाम बुर्जुवाई पार्टियों की राजनीति का अध्ययन करते हुए उसका मार्क्सवादी पद्धति से विश्लेषण करते थे। वह एक आदर्श कम्युनिस्ट क्रांतिकारी थे जिन पर तमाम कतारों और समूची जनता को भरोसा था। कामरेड विजय पिछले कई सालों से गंभीर अस्वस्थता का शिकार रहे। दमन की कठोर परिस्थितियों के बीच उन्हें इलाज की सुविधा भी बहुत कम ही मिल पाती थी। फिर भी वह इसकी जरा भी परवाह न करते हुए आखरी सांस तक मजबूती से डटे रहे।

कामरेड विजय की असमय मृत्यु से न सिर्फ दक्षिण बस्तर को बल्कि दण्डकारण्य आन्दोलन को बड़ा नुकसान हुआ। लेकिन कामरेड विजय के उच्च आदर्शों और जुझारू जीवन से प्रेरणा पाकर समूचे दण्डकारण्य में सैकड़ों, हजारों विजय पैदा होंगे। देश को सामंतवाद, दलाल नौकरशाह पूंजीवाद और साम्राज्यवाद के बंधनों से आजाद कर शोषणविहीन नवभारत के निर्माण की राह पर वे तब तक आगे बढ़ते रहेंगे जब तक कि अंतिम 'विजय' हासिल नहीं की जाती।

- **कामरेड विजय अमर रहें!**
- **कामरेड विजय के उच्च आदर्शों को आत्मसात करेंगे!**
- **दण्डकारण्य को आधार इलाके में तब्दील करने के लक्ष्य से जनयुद्ध को तेज करेंगे!**
- **वीर शहीदों के अधूरे मकसद को पूरा करेंगे!**

दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)

21 सितम्बर 2012

बस्तर माटी से पैदा हुआ जनयुद्ध का सेनानी, शोषित जनता का प्यारा नेता, दक्षिण रीजनल कमेटी सदस्य और दक्षिण बस्तर डिवीजनल कमेटी सचिव कामरेड विजय (मड़काम हिड़मा) को क्रांतिकारी जोहार!

दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)

बस्तर माटी से पैदा हुआ जनयुद्ध का सेनानी, शोषित जनता का प्यारा नेता, दक्षिण रीजनल कमेटी सदस्य और दक्षिण बस्तर डिवीजनल कमेटी सचिव कामरेड विजय (मड़काम हिड़मा) को क्रांतिकारी जोहार!

14 जुलाई 2012 के दिन हुए एक दर्दनाक हादसे में कामरेड विजय बुरी तरह घायल हुए थे। वे एक ट्रेक्टर को चलाते हुए जब एक जगह से लौट रहे थे, तब ट्रेक्टर एक पेड़ से टकराया था। इससे कामरेड विजय को छाती और पेट में गहरी चोटें आईं थीं। साथियों ने उन्हें बचाने की पूरी कोशिशें कीं पर वह नहीं बच सके। अगले दिन भोर के समय उन्होंने अंतिम सांस ली। कामरेड विजय करीब 27 सालों से क्रांतिकारी आन्दोलन से जुड़े हुए थे। शहादत के समय तक वे दण्डकारण्य में दक्षिण रीजिनल कमेटी सदस्य और दक्षिण बस्तर डिवीजनल कमेटी सचिव के रूप में आन्दोलन का प्रत्यक्ष नेतृत्व कर रहे थे। उनकी दुखद मृत्यु की खबर ने पार्टी, पीएलजीए, क्रांतिकारी जनताना सरकार, जनसंगठनों और दण्डकारण्य की समूची शोषित जनता को शोक में डुबो दिया। जगह–जगह उनकी स्मृति में सभाएं और रैलियां आयोजित की गईं। सभी ने आन्दोलन और पार्टी में उनकी सेवाओं और योगदान को याद कर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि पेश की।

हमारी दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी शहीद कामरेड विजय को विनम्र श्रद्धांजलि पेश करती है और उनके अधूरे सपनों को साकार बनाने का संकल्प लेती है। उनके शोकसंतप्त परिवारजनों, दोस्तों, साथियों और तमाम दक्षिण बस्तर की जनता के प्रति हमारी कमेटी गहरी संवेदना प्रकट करती है। आइए, शोषित अवाम के इस वीर सेनानी के प्रेरणादायी क्रांतिकारी जीवन के कुछ अहम पहलुओं पर नजर डालें और उनके उच्च आदर्शों को आत्मसात करें।

संघर्ष भरा बचपन

बस्तर की जनता में 'विजय' के नाम से लोकप्रिय कामरेड मड़काम हिड़मा का जन्म 1965 में दन्तेवाड़ा जिला कुवाकोण्डा ब्लाक के नीलवरम गांव में हुआ था। मध

लोगों की विशाल रैली निकाली गई थी। इस जन गोलबंदी के पीछे कामरेड विजय की भूमिका प्रमुख थी। 1996 में बस्तर में छठवीं अनुसूची लागू करने की मांग से चलाए गए व्यापक जन आन्दोलन के तहत कोन्टा और सुकमा इलाकों में आयोजित सभाओं के लिए जनता को गोलबंद करने में कामरेड विजय की अहम भूमिका रही।

सरकार–प्रायोजित सलवा जुडूम अभियान के खिलाफ दन्तेवाड़ा, जगदलपुर और चेरला में आयोजित जन प्रदर्शनों के लिए कामरेड विजय ने जनता की गोलबंदी की। इन विशाल जन प्रदर्शनों के जरिए जुडूम के फासीवादी चरित्र का भण्डाफोड़ किया गया। हर साल 10 फरवरी को मनाए जाने वाले भूमकाल दिवस में व्यापक जनता को शामिल करने और उनके अंदर जनता की राजसत्ता को मजबूत करने की चेतना बढ़ाने में कामरेड विजय ने खासा योगदान दिया।

क्रांतिकारी जनताना सरकार की जोन तैयारी कमेटी के आह्वान पर वर्ष 2011 और 2012 में भूमि समतलीकरण अभियान चलाया गया। खासकर जेगुरगोंडा इलाके में हजारों जनता ने लाखों कार्य दिवस पूरा कर सैकड़ों एकड़ जमीन को समतल बनाया और कई तालाबों की मरम्मत कर ली। तालाबों से नहरें बनाकर खेतों में पानी पहुंचाकर कई जगहों पर दो फसल की गारंटी कर दी गई। इस क्षेत्र में चलाए गए कार्यक्रम समूचे दण्डकारण्य के लिए प्रेरणादायक रहे। इसके पीछे कामरेड विजय की भूमिका महत्वपूर्ण रही।

एक आदर्शवान जन नेता

कामरेड विजय का ढाई दशकों का क्रांतिकारी जीवन तमाम शोषित व उत्पीड़ित जनता के लिए, खासकर आदिवासियों के लिए अनुकरणीय है। वह एक सर्वहारा नेता थे जोकि अत्यंत दबे–कुचले आदिवासियों के बीच से उभरे थे। वह एक अग्रणी नेता थे जिन्होंने बस्तरिया जनता के सामने न सिर्फ वैकल्पिक जन राजसत्ता और जनोन्मुखी विकास का नमूना पेश किया था, बल्कि उसे कार्यान्वित करके भी दिखाया।

कामरेड विजय को पेशेवर क्रांतिकारी बनकर गुरिल्ला दस्ते में शामिल होने के बाद ही पढ़ना–लिखना सीखने का मौका मिला। पार्टी की पत्रिकाएं, दस्तावेज, सर्कुलर के साथ–साथ महान मार्क्सवादी शिक्षकों की रचनाएं भी पढ़ने में सक्षम हो गए। अपने प्रभार वाले इलाकों में गुरिल्ला दलों और कमेटियों के लिए राजनीतिक कक्षाएं चलाकर उन्होंने कई कार्यकर्ताओं को विकसित किया। भर्ती अभियानों को सफल बनाते हुए सैकड़ों कार्यकर्ताओं को पार्टी व पीएलजीए में शामिल करने में उनका बड़ा योगदान रहा। अपने डिवीजन दक्षिण बस्तर के

आगे रहे। मार्च 2011 में चिंतलनार इलाके में कोया कमांडो और अन्य बलों ने अमानवीय हमला किया था। इस हमले का पीएलजीए ने तिम्मापुरम के पास बहादुराना ढंग से प्रतिरोध किया। इस कार्रवाई के पीछे कामरेड विजय की भूमिका रही। चिंतलनार क्षेत्र में दुश्मन द्वारा बरती गई बर्बरता का समूचे देश की जनता के सामने पर्दाफाश करने में भी वे आगे रहे। 6 अप्रैल 2010 को मुकरम–ताड़मेटला के पास पीएलजीए द्वारा किए गए ऐतिहासिक एम्बुश, जिसमें 76 सरकारी सशस्त्र बल मारे गए थे, की योजना बनाने वालों में कामरेड विजय भी एक थे। उस हमले की कामयाबी के लिए सेकण्डरी व बेस फोर्स को लामबंद करने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही। अपनी शहादत से चंद हफ्ते पहले सारकिनगुड़ा में सरकारी बलों द्वारा मचाए गए नरसंहार की निंदा करते हुए सच्चाइयों को जनता के सामने रखने में उनकी सक्रिय भूमिका रही।

राजनीतिक व आर्थिक संघर्षों में जनता की गोलबंदी करते हुए

1986 से लेकर अपनी शहादत के समय तक कामरेड विजय ने हर साल तेन्दुपत्ता तोड़ने वाले मजदूरों को संगठित कर शोषक सरकार और लालची ठेकेदारों के खिलाफ संघर्ष करने में प्रमुख भूमिका निभाई। 1996 में सुकमा कस्बे में 25 हजार लोगों ने एक जंगी रैली निकालकर सरकार से तेंदुपत्ता मजदूरी बढ़ाने की मांग की। इन लंबे संघर्षों के परिणाम स्वरूप तेन्दुपत्ता प्रत्येक गड्डी का दाम तीन पैसे से आज 140 पैसा तक बढ़ पाया। वनोपजों का दाम बढ़ाने के लिए कोन्टा, दोरनापाल, चिंतलनार, किष्टारम, गोल्लापल्ली, वेलमागोंडा, यामपुरम और राडेली के हाट–बाजारों में जनता को एकजुट कर संघर्ष छेड़कर सफलता हासिल करने में उनकी अहम भूमिका रही है। पड़ोसी राज्य आंध्रप्रदेश के खम्मम जिले के सत्यनारायणपुरम के जालिम जमींदार जनता का शोषण व उत्पीड़न के लिए बदनाम थे। लोगों को सही मजदूरी न देकर विरोध करने पर मारपीट करते थे। उन्होंने कई लोगों की जमीनों को हड़प रखा था। पार्टी के नेतृत्व में लगभग 1500 जनता ने वर्ष 1994 में इन जमींदारों के घरों पर धावा बोला। इनकी सारी संपत्तियां छीनकर आपस में बांट लीं। इस साहसिक जन कार्रवाई का नेतृत्व करने वालों में कामरेड विजय भी शामिल थे।

नवम्बर 2000 में छत्तीसगढ़ राज्य का गठन हुआ। छत्तीसगढ़ में बस्तर के विलय को अनुचित बताते हुए पृथक बस्तर राज्य की मांग से कई जगहों पर जन गोलबंदी हुई थी। बस्तरिया जनता की आकांक्षाओं का सम्मान करते हुए हमारी पार्टी ने इस मांग का जोरदार समर्थन किया। इस मांग के समर्थन में कोन्टा में 35 हजार

यम वर्गीय आदिवासी मुरिया परिवार में पैदा हुए कामरेड विजय छह संतानों में चौंथी संतान थे। बैलाडीला के पहाड़ों में जब लोहा खदानें शुरू हुईं तो इस क्षेत्र के हजारों आदिवासियों को विस्थापन की मार झेलनी पड़ी थी। विकास के नाम पर शोषक सरकारों द्वारा अपनाई जा रही विनाशकारी नीतियों का शिकार हुए अनगिनत गांवों में नीलवरम भी एक था। एक तरफ विस्थापन, दूसरी तरफ जमीन की कमी के चलते इस क्षेत्र के कई आदिवासी परिवारों ने दक्षिण का रुख किया। सैकड़ों आदिवासी परिवारों ने दक्षिण बस्तर के कोन्टा और जेगुरगोण्डा इलाकों में आकर बस गए। कामरेड विजय का परिवार भी 1975 के आसपास नीलवरम छोड़कर जेगुरगोंडा इलाके में स्थित करंगड गांव में आ बसा। वहां के दोरला समुदाय के लोगों से मिलजुलकर जंगल काटकर खेती करना शुरू किया। उस समय कामरेड विजय की उम्र सिर्फ दस साल थी।

क्रांतिकारी आंदोलन में रखे कदम

उस समय बाकी जगहों की तरह ही जेगुरगोंडा क्षेत्र की जनता भी फारेस्ट वालों के जुल्म और शोषण से बुरी तरह परेशान थी। एक तरफ फारेस्ट वालों का दमन–उत्पीड़न था, तो दूसरी तरफ राजस्व विभाग वाले भी जनता को लूटने–खसोटने में पीछे नहीं थे। रिश्वतखोरी व पट्टा दिलवाने के नाम पर अवैध वसूली जोरों पर चलती थीं। आदिवासी जंगलों का छान मारकर काफी मेहनत–मशक्कत करके वनोपजों को जमाकर हाट–बाजारों में कौड़ियों के दाम बेचकर मुश्किल से अपना पेट पालते थे। उसी समय 1980 में इस इलाके में तत्कालीन भाकपा (मा–ले) (पीपुल्सवार) के गुरिल्ला दलों ने कदम रखा।

1984 में इस क्षेत्र में बासागुड़ा दल के नाम से एक गुरिल्ला दल का गठन हुआ था। जो पामेड़, जेगुरगोंडा, उसूर और बासागुड़ा क्षेत्रों में जनता को संगठित करता था। यह दल करंगड़ गांव भी जाया करता था। वहां के नौजवान गुरिल्ला दल से खुशी से मिलते थे जिनमें कामरेड विजय भी एक थे। 1985–86 तक गांव–गांव में आदिवासी किसान मजदूर संगठन (अब दण्डकारण्य आदिवासी किसान मजदूर संघ – डीएकेएमएस) का निर्माण होने लगा था। करंगड़ गांव में भी संगठन बना था जिसमें कामरेड विजय को कार्यकारिणी में चुन लिया गया था।

शुरू से ही कामरेड विजय संगठन की गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेते थे। बोड़केल और चिन्तलनार में मापतौल में गड़बड़ी करने वाले लुटेरे व्यापारियों के खिलाफ 1986 में जनसंघर्ष किया गया था जिसमें कामरेड विजय

ने अपने गांव की जनता का नेतृत्व किया। तेन्दुपत्ता मजदूरी बढ़ाने के लिए ठेकेदारों के खिलाफ किए गए संघर्ष में भी उनकी सक्रिय भूमिका रही। इस क्रम में 1988 के प्रारंभ में सम्पन्न आदिवासी किसान मजदूर संगठन के रेंज अधिवेशन में कामरेड विजय ने प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया जहां उन्हें रेंज कमेटी सदस्य के रूप में चुन लिया गया था। उसी साल आयोजित संगठन के बस्तर जिला अधिवेशन के लिए भी उन्हें प्रतिनिधि के रूप में चुन लिया गया था। इस तरह संगठन को जिला स्तर पर विकसित करने में भी कामरेड विजय का योगदान रहा। रेंज कमेटी सदस्य के तौर पर जेगुरगोंडा क्षेत्र के सभी गांवों में जन संगठनों का निर्माण करने, विस्तार करने और उन्हें मजबूत बनाने में कामरेड विजय का महत्वपूर्ण योगदान रहा। रेंज भर में वन भूमि को कब्जा करने, जनविरोधी मुखियाओं और क्रूर कबीलशाहों के खिलाफ चलाए गए जन संघर्षों में उनकी प्रमुख भूमिका रही। उनके अपने गांव करंगड़ में पंतुलु वड्डे द्वारा नरबलि दी जाने पर जनता को गोलबंद कर उसका पर्दाफाश करने में कामरेड विजय आगे रहे। जन अदालत लगाकर पंतुलु को सजा दे दी गई थी। इस घटना ने पूरे इलाके में नरबलि देने वाले पुजारियों को खबरदार कर दिया।

अगस्त 1988 में चिंतलनार स्थित जनविरोधी व सामंती ठाकुरों के घरों पर करीब 500 जनता ने गुरिल्ला दलों के नेतृत्व में एक जोरदार हमला किया था। वहां के ठाकुर सूदखोरी, जोर जबर्दस्ती, गुण्डागर्दी और शोषण के लिए बदनाम थे। क्षेत्र की जनता में इनके प्रति जबर्दस्त गुस्सा था। इसलिए पार्टी ने इन पर राजनीतिक व आर्थिक रूप से हमला करने का फैसला लिया था। इस हमले में लाखों रूपये की सम्पत्ति और 16 हथियार जब्त कर कर लिए गए थे। इस हमले के लिए जनता को लामबंद करने में रेंज कमेटी के सदस्य के तौर पर कामरेड विजय ने अग्रणी भूमिका निभाई।

इस दौरान आंदोलन पर सरकारी दमन बढ़ गया। अक्टूबर 1988 में दुश्मन ने गांव पर हमला कर कामरेड विजय को गिरफ्तार किया था। जगदलपुर सेंट्रल जेल में 9 महीना रहकर वे जमानत पर रिहा हुए। इसके तुरंत बाद उन्होंने संगठन की गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेना शुरू किया। मई 1990 में वरंगल शहर में आयोजित आंध्रप्रदेश रैतु कुली संघम के ऐतिहासिक अधिवेशन में उन्होंने भाग लेकर उसमें बस्तर आदिवासियों के परम्परागत नृत्य पेश किए थे। उनके इस कार्यक्रम ने तमाम जनता का मन मोह लिया था। उसके कुछ ही दिनों बाद, यानी जून 1990 में वह पूर्णकालीन कार्यकर्ता बनकर पार्टी में भर्ती हो गए। उस समय तक वह शादीशुदा थे और उनकी दो बच्चियां भी थीं जिसमें

मार गिराने की साहसिक जन कार्रवाई में कामरेड विजय की महत्वपूर्ण भूमिका रही। कोन्टा के पास सिकवरगुड़ेम में सात और मणिकोन्टा में 15 एसपीओ को गिरफ्तार कर जन अदालत में पेश कर जनता के फैसले पर उन्हें सजाएं दी गईं। भाजपा सरकार को झकझोर देने वाली इन कार्रवाइयों का राजनीतिक रूप से कामरेड विजय ने नेतृत्व किया था। विंजरम स्थित सलवा जुडूमी शिविर के एसपीओ पर तीन सौ जनता को लेकर किए गए हमले का कामरेड विजय ने खुद नेतृत्व किया। सलवा जुडूम के शुरूआती दौर में नगा पुलिस बल आतंक का पर्याय बन चुके थे। उनके जुल्मों पर रोक लगाने के उद्देश्य से कोत्ताचेरूवु के पास एम्बुश की योजना बनाने में कामरेड विजय की भूमिका रही।

इस तरह दक्षिण बस्तर में सलवा जुडूम के विस्तार को रोककर उसे ध्वस्त करने में कामरेड विजय ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जन मिलिशिया को सक्रिय करके व्यापक जनता को प्रतिरोधी संघर्ष में उतारकर जुडूम पर पलटवार करने में उनकी भूमिका अहम रही। जब जुडूम के अत्याचारों से डरकर जनता राहत शिविरों में जाने लगी थी ऐसे कई परिवारों को हिम्मत बताकर तथा उन्हें सुरक्षित इलाकों में भेजकर जनता की रक्षा करने में कामरेड विजय ने अथक प्रयास किया। दुश्मन के बंदी शिविरों में गए हुए लोगों को समझा–बुझाकर और विभिन्न तरीकों से पार्टी का संदेश पहुंचाकर उन्हें फिर से गांवों में लाने के लिए उन्होंने धैर्यपूर्वक काम किया। उनकी कोशिशें रंग लाईं कई परिवार शिविर छोड़कर फिर से अपने गांवों में आ गए।

आपरेशन ग्रीन हंट का मुकाबला करते हुए

2009 में दोबारा सत्तारूढ़ हुई यूपीए सरकार ने विभिन्न राज्य सरकारों के साथ तालमेल से एक अत्यंत फासीवादी देशव्यापी दमन अभियान शुरू किया। इसे आपरेशन ग्रीन हंट का नाम दिया गया। इस अभियान के तहत दक्षिण बस्तर क्षेत्र के सिंगनमड़गु, गोमपाड़, सूर्पणगुड़ा, गोल्लागुड़ा, पुजारीकांकेर, तिम्मापुरम, ताड़मेटला, मोरपल्ली आदि गांवों में पाशविक हमले कर दर्जनों की संख्या में निर्दोष आदिवासियों का कत्लेआम किया गया। बेकसूरों को मारकर उन्हें इनामी नक्सली के रूप में चित्रित करना एक आम बात बन गई। सैकड़ों और हजारों की संख्या में पुलिस व अर्द्ध सैनिक बलों, खासकर कोबरा कमांडो को भेजकर गांवों में जब आतंक का तांडव मचाया जा रहा था, तब पीएलजीए ने जनता के सक्रिय सहयोग से इसका माकूल जवाब दिया। वह दक्षिण बस्तर ही था जहां पर कोबरा कमांडों को मार गिराने में पीएलजीए ने पहली बार सफलता हासिल की। फौजी तौर पर दुश्मन का मुकाबला करने के साथ–साथ उसका राजनीतिक तौर पर पर्दाफाश करने में भी कामरेड विजय हमेशा

सलवा जुडूम को हराने में

जून 2005 में केन्द्र व राज्य सरकारों की सुनियोजित साजिश के तहत बस्तरिया जनता का कट्टर दुश्मन महेन्द्र कर्मा के नेतृत्व में सलवा जुडूम के नाम से एक फासीवादी दमन अभियान शुरू किया गया। दन्तेवाड़ा जिले के (अब बीजापुर जिला) कुटरू इलाके में स्थानीय जन दुश्मनों और प्रतिक्रियावादियों ने यह हमला शुरू किया जिसे पुलिस व अर्द्ध सैनिक बलों का पूर्ण समर्थन व सहयोग प्राप्त था। सीआरपीएफ के कई अतिरिक्त बटालियनों के अलावा विशेषकर नगा और मिजो बटालियनों को भी तैनात किया गया। क्रांतिकारी आन्दोलन का समूल उन्मूलन करने की मंशा से शुरू किए गए इस अभियान के दौरान जनता पर मध्य युगीन बर्बरता से भी बढ़कर अत्याचार, जुल्म और कत्लेआम किए गए। भैरमगढ़, गंगालूर, कुटरू और फरसेगढ़ इलाकों में सैकड़ों मकान जला दिए गए। सम्पत्ति लूटी गई। बेकसूर आदिवासियों को जंगली जानवरों की तरह शिकार कर मार डाला गया। जगह–जगह पर राहत शिविर के नाम से बंदी शिविरों का निर्माण कर जनता को हजारों की संख्या में उनमें धकेल दिया गया था।

जनवरी 2006 तक सलवा जुडूम का विस्तार दक्षिण में कोन्टा क्षेत्र तक हो चुका था। वहां के दर्जनों गांवों पर सलवा जुडूमी गुण्डों, सरगनाओं, पुलिस और अर्द्ध सैनिक बलों ने संयुक्त रूप से हमले कर सैकड़ों घरों को जलाकर राख कर दिया। बच्चे, बूढ़े और महिलाओं समेत दर्जनों लोगों को मौत की नींद सुला दी। महिलाओं के साथ सामूहिक बलात्कार की सैकड़ों घटनाएं हुईं। दोरनापाल, कोन्टा, विंजरम, पोलमपल्ली आदि गांवों में शिविर खोलकर हजारों जनता को बंदी बनाकर रखा गया। पूरे गांव वीरान हो गए।

बर्बर सलवा जुडूम को परास्त करने के लिए पार्टी की दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी ने विशेष प्रतिरोधी अभियान छेड़ दिया। कड़ा मुकाबला और करारे प्रहार के बिना जुडूम की दरिंदगी को रोकना संभव नहीं है, इस समझदारी से जुडूम के नेताओं व गुण्डों तथा पुलिस व अर्द्ध सैनिक बलों पर सुनियोजित कार्यनीतिक जवाबी हमले शुरू किए गए।

बैलाडीला के पहाड़ों में स्थित एनएमडीसी के बारूद डिपो पर हमला कर 20 टन बारूद व अन्य सामग्री जब्त करने की कार्रवाई के लिए दक्षिण बस्तर से जन मिलिशिया को इकट्ठा कर भेजने में कामरेड विजय की भूमिका रही। दरभागुड़ा के पास जुडूम के गुण्डों को ले जा रहे ट्रक को बारूदी सुरंग से उड़ाकर दर्जनों का सफाया करने की कार्रवाई के लिए व्यूह रचना करने वालों में कामरेड विजय शामिल थे। एर्राबोर शिविर में मौजूद एक सौ से ज्यादा एसपीओ पर हमला कर कइयों को

से एक बच्ची की मौत हो चुकी थी। उन्होंने अपनी पत्नी को भी क्रांतिकारी आंदोलन में आने के लिए प्रोत्साहित किया था जिससे कुछ साल के अंतराल में वह भी पार्टी में शामिल हो गईं। पार्टी ने उन्हें कोन्टा क्षेत्र के गुरिल्ला दल में शामिल किया। इस तरह उनके गुरिल्ला जीवन की शुरूआत हुई।

'जन जागरण' अभियान को परास्त करने में

अगस्त–सितम्बर 1990 में शोषक–शासक वर्गों ने बस्तर के क्रांतिकारी संघर्ष को कुचलने के लिए पहली बार जन जागरण अभियान शुरू किया था। अविभाजित मध्यप्रदेश की भाजपा सरकार की शह पर कांग्रेस और सीपीआई की मिलिभगत से यह अभियान कुटरू क्षेत्र में शुरू हुआ था। इसका विस्तार दक्षिण और पश्चिम बस्तर के इलाकों में हुआ था। यह एक अमानवीय व भयानक अभियान था जिसमें सैकड़ों आदिवासियों को उठा ले जाकर क्रूर यातनाएं दी जाती थीं। कम से कम दस लोगों की इस अभियान के अंतर्गत निर्मम हत्या की गई थी।

इस अभियान के चरित्र व उद्देश्य को समझकर पार्टी ने जल्द ही जवाबी मुहिम छेड़ दी। इस अभियान को हराने के लिए उस समय की अविभाजित बस्तर डिवीजनल कमेटी के नेतृत्व में एक विशेष प्लाटून का निर्माण किया गया। गुरिल्ला बलों ने चार महीनों तक प्रतिरोधी कार्रवाइयों को तेज किया। उस दौरान नेतीकाकिलेर के पास एक एम्बुश कर एसएएफ के तीन जवानों को मौत के घाट उतारकर चार अन्य को घायल किया गया। एटेगट्टा के पास और एक एम्बुश कर सात पुलिस वालों का सफाया कर उनके हथियार छीन लिए गए थे। इसी सिलसिले में वेदरे गांव के जनविरोधी मुखियाओं को कौण्डे गांव में पकड़कर दण्डित किया गया था। किष्टारम एरिया से जन जागरण की सभा में जनता को ले जा रहे सीपीआई के तहसील स्तर के नेता सोड़ी अंदाल को पकड़कर सजा दी गई थी। बासागुड़ा कस्बे में सीपीआई और कांग्रेस के नेतृत्व में प्रस्तावित जन जागरण की सभाओं को जनता के सक्रिय समर्थन से विफल कर दिया गया था। सीपीआई का जिला स्तर का नेता और दन्तेवाड़ा से विधायक रहे नंदाराम सोड़ी को उसके गृहग्राम वेड़मा (पालनार) में जनता के बीच खड़ा करके गलती मनवाई गई। इस तरह उनके तमाम बुरे मंसूबों पर पानी फेरा गया था। इन तमाम घटनाओं में कामरेड विजय की सक्रिय भागीदारी रही।

एसएसी/एसी सदस्य के रूप में

दण्डकारण्य की फारेस्ट कमेटी ने 1992 में एरिया स्तर पर पार्टी कमेटियों के निर्माण का फैसला लिया था। इसके मुताबिक 1992 में गठित कोन्टा एरिया कमेटी (एसएसी) में कामरेड विजय को सदस्य चुन लिया गया था। कोन्टा एरिया

में आन्दोलन के विस्तार और विकास से कामरेड विजय की भूमिका को अलग करके नहीं देखा जा सकता। पार्टी सदस्यता बढ़ाने, पार्टी सेलों को मजबूत बनाने, उनके द्वारा जन संगठनों और जन मिलिशिया को चलाने का खासा अनुभव उन्होंने प्राप्त किया था। जमींदारों के खिलाफ संघर्ष करने में तथा उनसे जमीनें छीनकर गरीब व भूमिहीन आदिवासी किसानों को बांटने में उनका जबर्दस्त योगदान रहा। पेद्दा केड़वाल में बुर्दा वड्डे (मड़काम जोगा), भण्डारपदर में काया कोसाल, तोंडामर्का में माड़वी राजाल, टेट्टेमड़गु में मड़काम नंदाल, पालोड़ी में कुटाल, गगनपल्ली में भूतपूर्व विधायक सोयम जोगैया, कोन्टा का गोपाल राव और मंगलगुड़ा के जमींदारों आदि के खिलाफ संघर्ष करके उनसे दर्जनों एकड़ जमीनें छीन लेने में कोन्टा एरिया की जनता को कामरेड विजय ने सक्षम नेतृत्व प्रदान किया। सैकड़ों गरीब परिवारों को जमीनें उपलब्ध करवाकर न सिर्फ उनके जीवन में बदलाव लाया गया, बल्कि पार्टी के प्रति उनका समर्थन भी जुटाया गया। इस तरह कामरेड विजय ने जनता के दिलों में अमिट छाप छोड़ दी।

जन राजसत्ता की स्थापना की दिशा में बढ़ाये कदम

1995 में आयोजित पुरानी पीपुल्सवार के अखिल भारतीय विशेष अधिवेशन में गांव स्तर पर शोषित जनता की राजसत्ता के अंगों का निर्माण ग्राम राज्य कमेटी (जीआरसी) के रूप में शुरू करने का फैसला किया गया था। इसके अंतर्गत दण्डकारण्य में हमारे मजबूत गांवों में ग्राम राज्य कमेटियों का निर्माण शुरू करने का प्रस्ताव किया गया। इसे लागू करते हुए दक्षिण बस्तर के कोन्टा एरिया में सबसे पहले ग्राम राज्य कमेटियों का निर्माण शुरू हुआ। दर्जनों गांवों में जनता ने अपनी सत्ता के संगठनों का निर्माण शुरू किया। जनता को यह अनुभव प्रदान करने वाले शुरूआती कामरेडों में कामरेड विजय एक थे। जनता के बीच सहकारिता के आधार पर श्रम टीमों का गठन करने में कामरेड विजय आगे रहे।

जनता के जीवनस्तर को सुधारने के लिए जीआरसी की अगुवाई में दर्जनों तालाब निर्मित किए गए थे जिससे जनता की सामूहिक जरूरतें पूरी हुईं। कई खेतों को दूसरी फसल के लिए पानी उपलब्ध हुआ। खेतिबाड़ी के कामों को अविलंब जारी रखने के रास्ते में रोड़े बने रीति–रिवाजों में बदलाव की जरूरत महसूस कर कामरेड विजय ने जनता में व्यापक विचार–विमर्श किया। जनता के अनुमोदन से ही इसमें बदलाव लाने के लिए उन्होंने काफी प्रयास किया। जनता की माली हालत को बेहतर बनाने के लिए तालाबों में मछली पालन शुरू कर जीआरसी के नेतृत्व में उसे कई गांवों

में फैलाने पर जोर दिया गया। जनता के स्वास्थ्य को सुधारने के लिए स्वास्थ्य शिविर चलाकर इलाज करवाया गया। बीमारियों की रोकथाम के लिए गांवों में साफ–सफाई को बढ़ावा दिया गया। कुल मिलाकर कहा जाए तो जीआरसी के नेतृत्व में वर्ग संघर्ष को जारी रखते हुए जन कल्याण के क्षेत्र में कई कदम उठाकर कामरेड विजय ने पार्टी को अनमोल अनुभव मुहैया कराया।

आंदोलन के विकास के साथ–साथ आगे बढ़ते हुए

कोंटा एरिया में एसएसी/एसी सदस्य के रूप में काम करने के बाद उन्होंने एरिया कमेटी सचिव की जिम्मेदारी निभाई थी। वर्ष 2000 में पार्टी के दक्षिण बस्तर डिवीजन का अधिवेशन सम्पन्न हुआ था जिसमें डिवीजन को दक्षिण और पश्चिम बस्तर डिवीजनों के रूप में विभाजित करने का निर्णय लिया गया। इस अधिवेशन में कामरेड विजय को दक्षिण बस्तर डिवीजनल कमेटी सदस्य के तौर पर चुन लिया गया था। तबसे लेकर अपनी आखरी सांस तक डिवीजनल कमेटी में रहकर उन्होंने डिवीजन आन्दोलन का सुचारू रूप से नेतृत्व किया।

उनके विकासक्रम को देखते हुए 2009 में गठित दक्षिण रीजिनल कमेटी में उन्हें सदस्य चुन लिया गया। दिसम्बर 2011 में उन्हें दक्षिण बस्तर डिवीजनल कमेटी सचिव के रूप में चुन लिया गया। इसके अलावा वह शुरू से दण्डकारण्य आदिवासी किसान मजदूर संगठन में भी विभिन्न जिम्मेदारियां निभाते रहे। कुछ समय के लिए उस संगठन का जोनल उपाध्यक्ष के रूप में उन्होंने नेतृत्व किया था।

क्रांतिकारी जनताना सरकार को किया मजबूत

वर्ष 2001 में तत्कालीन भाकपा (मा–ले) (पीपुल्सवार) की नौवीं कांग्रेस सफलतापूर्वक सम्पन्न हुई। उसमें लिए गए निर्णय के अनुसार जीआरसी की जगह पर आरपीसी (क्रांतिकारी जन कमेटी) के रूप में पुनरगठन की प्रक्रिया शुरू हुई। इसके तहत दक्षिण बस्तर डिवीजन में आरपीसी का व्यापक रूप से निर्माण कर क्रांतिकारी जन सरकारों का शासन कायम करने में कामरेड विजय ने जनता का सक्षम नेतृत्व किया। आरपीसी की अगुवाई में शाखा कमेटियों के जरिए विभिन्न विभागों का काम किस रूप में रहेगा, यह उन्होंने व्यावहारिक तौर पर जनता को दिखलाया। जन मिलिशिया को मजबूत किए बगैर जन सरकारों का अस्तित्व नहीं रहेगा, इस सच्चाई को गहराई से समझकर उन्होंने मिलिशिया प्लाटूनों का निर्माण कर आरपीसी के कार्यक्रमों को सुचारू रूप से संचालित किया। गांव स्तर की क्रांतिकारी जन सरकार से शुरू कर पहले एरिया स्तर पर और बाद में डिवीजन स्तर पर जन सरकार की स्थापना करने में कामरेड विजय का योगदान अविस्मरणीय रहा।